



Priya Bharti

03 Aug 1992

12:30 PM

Muzaffarpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119763901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 03/08/1992
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 12:30:00 घंटे
इष्ट _____: 18:06:55 घटी
स्थान _____: Muzaffarpur
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:07:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:23:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:41:32 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:09 घंटे
साम्पातिक काल _____: 09:29:58 घंटे
सूर्योदय _____: 05:15:14 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:33:33 घंटे
दिनमान _____: 13:18:19 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 17:25:54 कर्क
लग्न के अंश _____: 22:42:43 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: हस्त - 3
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: सिद्ध
करण _____: कौलव
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: ण--
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1914	श्रावण	12
पंजाबी	संवत : 2049	श्रावण	19
बंगाली	सन् : 1399	श्रावण	18
तमिल	संवत : 2049	आदी	19
केरल	कोल्लम : 1167	कर्कदम	19
नेपाली	संवत : 2049	श्रावण	19
चैत्रादि	संवत : 2049	श्रावण	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2049	श्रावण	शुक्ल 5

पंचांग

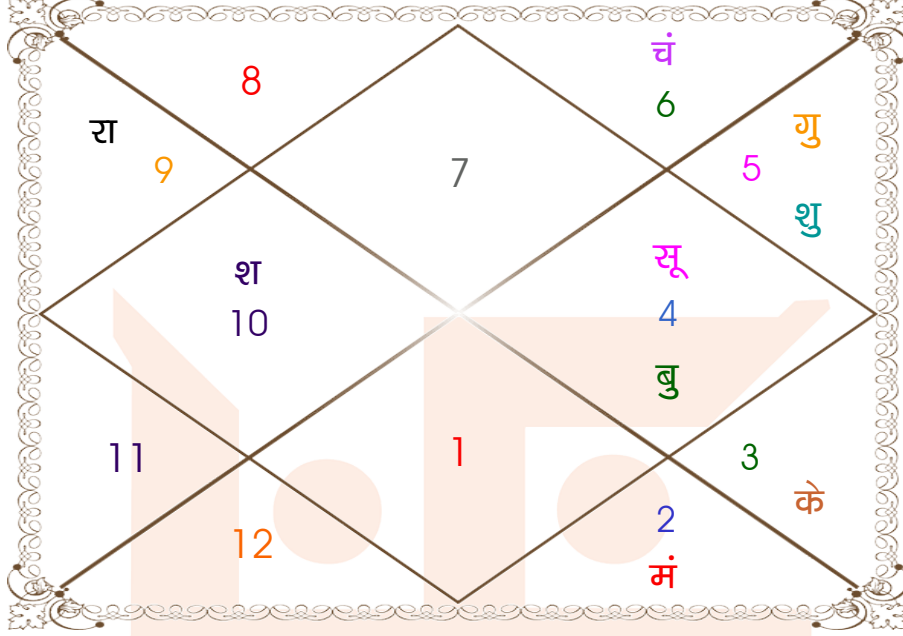
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
 तिथि समाप्ति काल _____ : 08:06:27
 जन्म तिथि _____ : 6
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : हस्त
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 18:24:19 घंटे
 जन्म योग _____ : हस्त
 सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
 योग समाप्ति काल _____ : 16:48:30 घंटे
 जन्म योग _____ : सिद्ध
 सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
 करण समाप्ति काल _____ : 08:06:27 घंटे
 जन्म करण _____ : कौलव
 भयात _____ : 41:16:48
 भभोग _____ : 56:02:35
 भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 2 वर्ष 7 मा 8 दि

घात चक्र

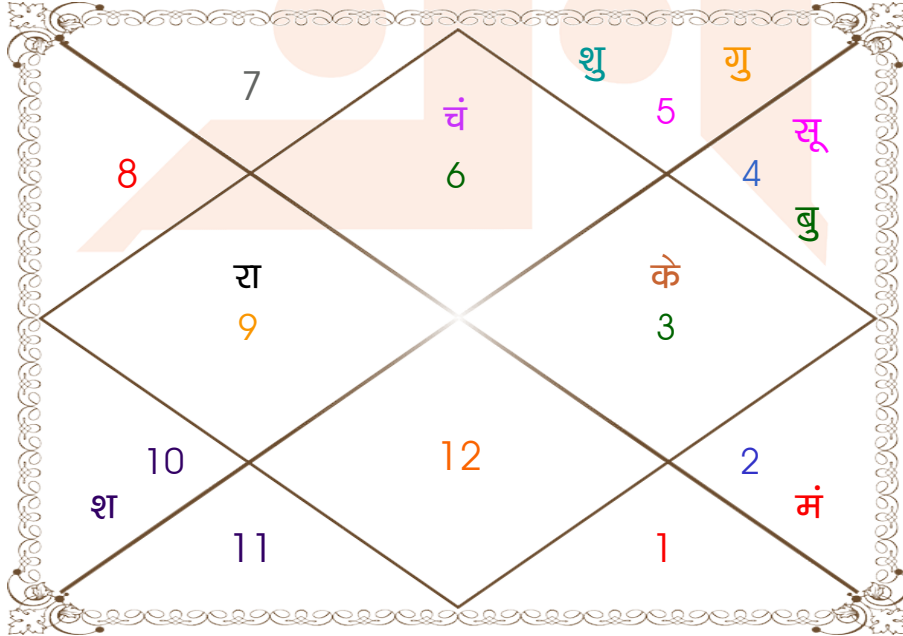
मास _____ : भाद्रपद
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : श्रवण
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : कौलव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मेष
 लग्न _____ : मीन
 सूर्य _____ : मेष
 चन्द्र _____ : वृश्चिक
 मंगल _____ : वृष
 बुध _____ : मीन
 गुरु _____ : मिथुन
 शुक्र _____ : कर्क
 शनि _____ : मीन
 राहु _____ : सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

		मं	के
			बु सू
श			शु गु
रा		ल	चं

लग्न कुण्डली

मं		
के		
बु सू		श
गु शु	ल	रा
चं		

विंशोत्तरी
चन्द्र 2वर्ष 7मा 8दि
चन्द्र

03/08/1992

13/03/2105

चन्द्र	13/03/1995
मंगल	13/03/2002
राहु	12/03/2020
गुरु	12/03/2036
शनि	13/03/2055
बुध	12/03/2072
केतु	13/03/2079
शुक्र	13/03/2099
सूर्य	13/03/2105

योगिनी
संकटा 2वर्ष 1मा 0दि
संकटा

04/09/2022

04/09/2030

संकटा	14/06/2024
मंगला	03/09/2024
पिंगला	12/02/2025
धान्या	14/10/2025
भ्रामरी	04/09/2026
भद्रिका	14/10/2027
उल्का	12/02/2029
सिद्धा	04/09/2030



FUTUREPOINT
Astro Solutions



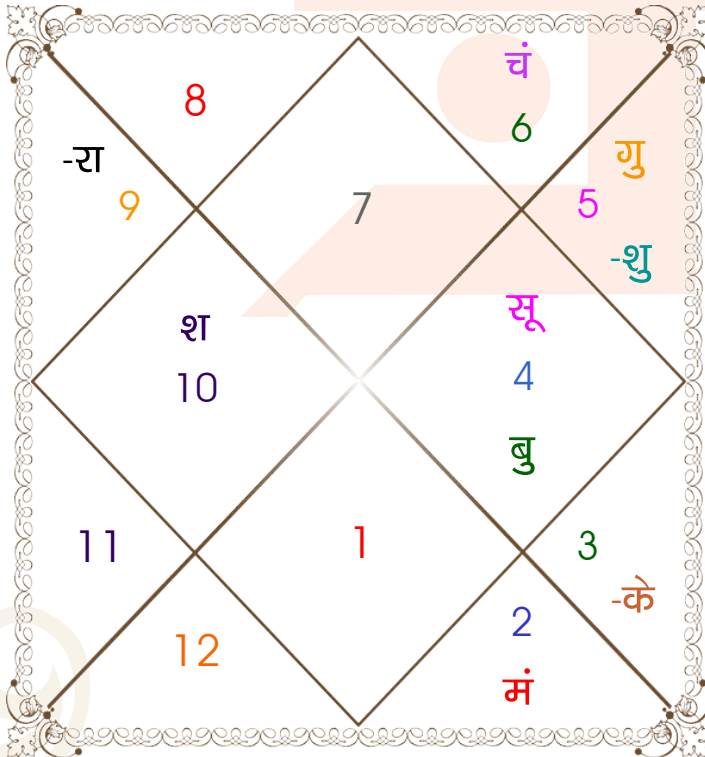
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	22:42:43	312:23:28	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
सूर्य			कर्क	17:25:54	00:57:27	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			कन्या	19:51:31	14:10:39	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	केतु	मित्र राशि
मंगल			वृष	11:18:17	00:40:05	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	मंगल	सम राशि
बुध	व	अ	कर्क	16:41:58	00:44:53	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	शत्रु राशि
गुरु			सिंह	21:49:29	00:11:43	पूर्वाषाढा	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	मित्र राशि
शुक्र			सिंह	01:21:00	01:13:49	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	शत्रु राशि
शनि	व		मक	21:41:10	00:04:28	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	स्वराशि
राहु	व		धनु	06:08:11	00:03:28	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	06:08:11	00:03:28	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	नीच राशि
हर्ष	व		धनु	21:15:32	00:02:05	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
नेप	व		धनु	23:10:10	00:01:27	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
प्लूटो			तुला	26:23:35	00:00:07	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	---
दशम भाव			कर्क	26:19:47	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	गुरु	--

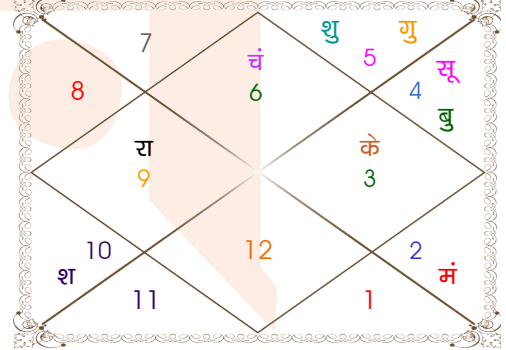
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:31

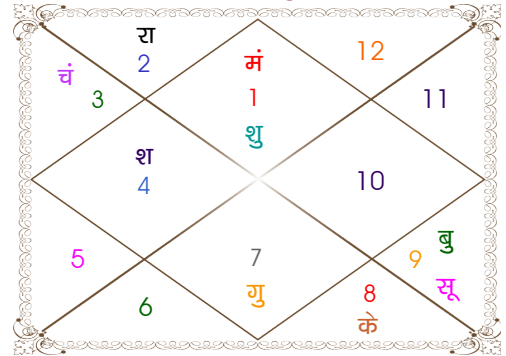
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 08:18:54	तुला 22:42:43
2	वृश्चिक 08:18:54	वृश्चिक 23:55:05
3	धनु 09:31:15	धनु 25:07:26
4	मकर 10:43:37	मकर 26:19:47
5	कुम्भ 10:43:37	कुम्भ 25:07:26
6	मीन 09:31:15	मीन 23:55:05
7	मेष 08:18:54	मेष 22:42:43
8	वृष 08:18:54	वृष 23:55:05
9	मिथुन 09:31:15	मिथुन 25:07:26
10	कर्क 10:43:37	कर्क 26:19:47
11	सिंह 10:43:37	सिंह 25:07:26
12	कन्या 09:31:15	कन्या 23:55:05

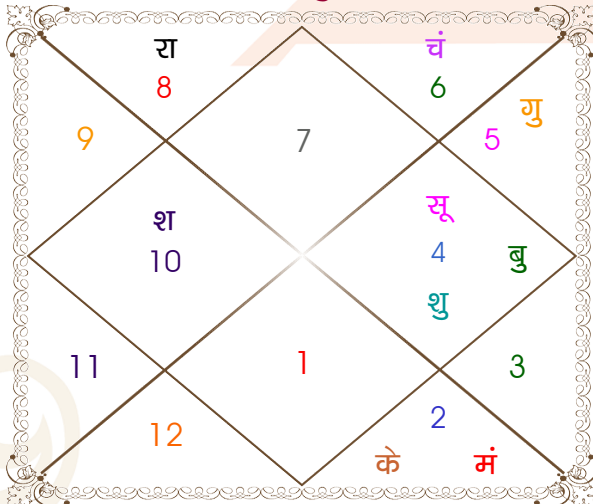
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला 22:42:43	
2	वृश्चिक 22:04:11	
3	धनु 23:25:15	
4	मकर 26:19:47	
5	कुम्भ 28:36:35	
6	मीन 27:36:49	
7	मेष 22:42:43	
8	वृष 22:04:11	
9	मिथुन 23:25:15	
10	कर्क 26:19:47	
11	सिंह 28:36:35	
12	कन्या 27:36:49	

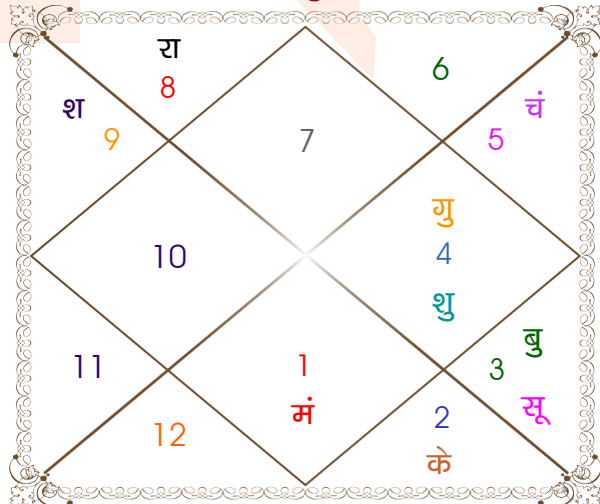
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 2 वर्ष 7 मास 8 दिन

चंद्र 10 वर्ष 03/08/1992 13/03/1995	मंगल 7 वर्ष 13/03/1995 13/03/2002	राहु 18 वर्ष 13/03/2002 12/03/2020	गुरु 16 वर्ष 12/03/2020 12/03/2036	शनि 19 वर्ष 12/03/2036 13/03/2055
00/00/0000	मंगल 09/08/1995	राहु 23/11/2004	गुरु 30/04/2022	शनि 16/03/2039
00/00/0000	राहु 27/08/1996	गुरु 18/04/2007	शनि 11/11/2024	बुध 23/11/2041
00/00/0000	गुरु 02/08/1997	शनि 22/02/2010	बुध 17/02/2027	केतु 02/01/2043
00/00/0000	शनि 11/09/1998	बुध 11/09/2012	केतु 23/01/2028	शुक्र 03/03/2046
00/00/0000	बुध 08/09/1999	केतु 29/09/2013	शुक्र 23/09/2030	सूर्य 13/02/2047
03/08/1992	केतु 05/02/2000	शुक्र 29/09/2016	सूर्य 13/07/2031	चंद्र 14/09/2048
केतु 11/01/1993	शुक्र 06/04/2001	सूर्य 24/08/2017	चंद्र 11/11/2032	मंगल 24/10/2049
शुक्र 11/09/1994	सूर्य 12/08/2001	चंद्र 23/02/2019	मंगल 18/10/2033	राहु 30/08/2052
सूर्य 13/03/1995	चंद्र 13/03/2002	मंगल 12/03/2020	राहु 12/03/2036	गुरु 13/03/2055
बुध 17 वर्ष 13/03/2055 12/03/2072	केतु 7 वर्ष 12/03/2072 13/03/2079	शुक्र 20 वर्ष 13/03/2079 13/03/2099	सूर्य 6 वर्ष 13/03/2099 13/03/2105	चंद्र 10 वर्ष 13/03/2105 00/00/0000
बुध 09/08/2057	केतु 08/08/2072	शुक्र 12/07/2082	सूर्य 30/06/2099	चंद्र 12/01/2106
केतु 06/08/2058	शुक्र 08/10/2073	सूर्य 13/07/2083	चंद्र 30/12/2099	मंगल 13/08/2106
शुक्र 06/06/2061	सूर्य 13/02/2074	चंद्र 12/03/2085	मंगल 07/05/2100	राहु 12/02/2108
सूर्य 12/04/2062	चंद्र 14/09/2074	मंगल 13/05/2086	राहु 01/04/2101	गुरु 13/06/2109
चंद्र 12/09/2063	मंगल 10/02/2075	राहु 12/05/2089	गुरु 18/01/2102	शनि 12/01/2111
मंगल 08/09/2064	राहु 29/02/2076	गुरु 11/01/2092	शनि 31/12/2102	बुध 12/06/2112
राहु 28/03/2067	गुरु 04/02/2077	शनि 13/03/2095	बुध 06/11/2103	केतु 04/08/2112
गुरु 03/07/2069	शनि 16/03/2078	बुध 11/01/2098	केतु 13/03/2104	00/00/0000
शनि 12/03/2072	बुध 13/03/2079	केतु 13/03/2099	शुक्र 13/03/2105	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 2 वर्ष 7 मा 18 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध 11/11/2024 17/02/2027	गुरु - केतु 17/02/2027 23/01/2028	गुरु - शुक्र 23/01/2028 23/09/2030	गुरु - सूर्य 23/09/2030 13/07/2031	गुरु - चंद्र 13/07/2031 11/11/2032
बुध 08/03/2025 केतु 25/04/2025 शुक्र 10/09/2025 सूर्य 22/10/2025 चंद्र 30/12/2025 मंगल 16/02/2026 राहु 20/06/2026 गुरु 08/10/2026 शनि 17/02/2027	केतु 08/03/2027 शुक्र 04/05/2027 सूर्य 21/05/2027 चंद्र 19/06/2027 मंगल 09/07/2027 राहु 29/08/2027 गुरु 13/10/2027 शनि 06/12/2027 बुध 23/01/2028	शुक्र 04/07/2028 सूर्य 21/08/2028 चंद्र 11/11/2028 मंगल 06/01/2029 राहु 02/06/2029 गुरु 09/10/2029 शनि 13/03/2030 बुध 29/07/2030 केतु 23/09/2030	सूर्य 08/10/2030 चंद्र 01/11/2030 मंगल 18/11/2030 राहु 01/01/2031 गुरु 09/02/2031 शनि 27/03/2031 बुध 08/05/2031 केतु 25/05/2031 शुक्र 13/07/2031	चंद्र 22/08/2031 मंगल 20/09/2031 राहु 02/12/2031 गुरु 05/02/2032 शनि 22/04/2032 बुध 30/06/2032 केतु 28/07/2032 शुक्र 17/10/2032 सूर्य 11/11/2032
गुरु - मंगल 11/11/2032 18/10/2033	गुरु - राहु 18/10/2033 12/03/2036	शनि - शनि 12/03/2036 16/03/2039	शनि - बुध 16/03/2039 23/11/2041	शनि - केतु 23/11/2041 02/01/2043
मंगल 01/12/2032 राहु 21/01/2033 गुरु 07/03/2033 शनि 30/04/2033 बुध 17/06/2033 केतु 07/07/2033 शुक्र 02/09/2033 सूर्य 19/09/2033 चंद्र 18/10/2033	राहु 26/02/2034 गुरु 23/06/2034 शनि 09/11/2034 बुध 13/03/2035 केतु 03/05/2035 शुक्र 26/09/2035 सूर्य 09/11/2035 चंद्र 21/01/2036 मंगल 12/03/2036	शनि 02/09/2036 बुध 05/02/2037 केतु 10/04/2037 शुक्र 10/10/2037 सूर्य 04/12/2037 चंद्र 05/03/2038 मंगल 09/05/2038 राहु 20/10/2038 गुरु 16/03/2039	बुध 02/08/2039 केतु 29/09/2039 शुक्र 10/03/2040 सूर्य 29/04/2040 चंद्र 19/07/2040 मंगल 15/09/2040 राहु 09/02/2041 गुरु 20/06/2041 शनि 23/11/2041	केतु 17/12/2041 शुक्र 22/02/2042 सूर्य 14/03/2042 चंद्र 17/04/2042 मंगल 11/05/2042 राहु 10/07/2042 गुरु 02/09/2042 शनि 06/11/2042 बुध 02/01/2043
शनि - शुक्र 02/01/2043 03/03/2046	शनि - सूर्य 03/03/2046 13/02/2047	शनि - चंद्र 13/02/2047 14/09/2048	शनि - मंगल 14/09/2048 24/10/2049	शनि - राहु 24/10/2049 30/08/2052
शुक्र 14/07/2043 सूर्य 09/09/2043 चंद्र 15/12/2043 मंगल 20/02/2044 राहु 12/08/2044 गुरु 13/01/2045 शनि 15/07/2045 बुध 26/12/2045 केतु 03/03/2046	सूर्य 21/03/2046 चंद्र 19/04/2046 मंगल 09/05/2046 राहु 30/06/2046 गुरु 15/08/2046 शनि 09/10/2046 बुध 27/11/2046 केतु 18/12/2046 शुक्र 13/02/2047	चंद्र 03/04/2047 मंगल 06/05/2047 राहु 01/08/2047 गुरु 17/10/2047 शनि 17/01/2048 बुध 08/04/2048 केतु 11/05/2048 शुक्र 16/08/2048 सूर्य 14/09/2048	मंगल 07/10/2048 राहु 07/12/2048 गुरु 30/01/2049 शनि 04/04/2049 बुध 01/06/2049 केतु 24/06/2049 शुक्र 31/08/2049 सूर्य 20/09/2049 चंद्र 24/10/2049	राहु 29/03/2050 गुरु 15/08/2050 शनि 26/01/2051 बुध 23/06/2051 केतु 23/08/2051 शुक्र 12/02/2052 सूर्य 04/04/2052 चंद्र 30/06/2052 मंगल 30/08/2052

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध



FUTUREPOINT
Astro Solutions

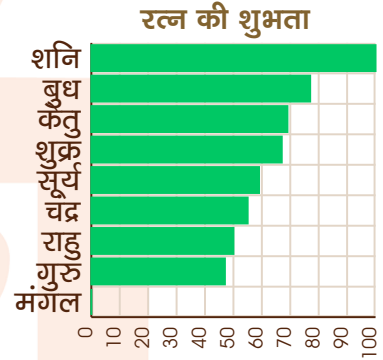


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सुख, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	77%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	69%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	67%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	59%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
मोती	चंद्र	55%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	50%	पराक्रम, धनार्जन
पुखराज	गुरु	47%	हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	13/03/1995	66%	67%	0%	83%	47%	67%	100%	25%	56%
मंगल	13/03/2002	66%	61%	6%	64%	55%	67%	100%	25%	75%
राहु	12/03/2020	44%	34%	0%	77%	47%	73%	100%	62%	56%
गुरु	12/03/2036	66%	61%	0%	64%	61%	55%	100%	50%	69%
शनि	13/03/2055	44%	34%	0%	83%	47%	73%	100%	56%	56%
बुध	12/03/2072	66%	34%	0%	89%	47%	73%	100%	50%	69%
केतु	13/03/2079	44%	34%	0%	77%	47%	73%	89%	25%	81%
शुक्र	13/03/2099	44%	34%	0%	83%	47%	80%	100%	56%	75%
सूर्य	13/03/2105	72%	61%	0%	77%	55%	55%	89%	25%	56%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
सम
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

दाम्पत्य कलह
अल्प बचत
कम खर्च
स्वास्थ्य
पराक्रम



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगी। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी। सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसे

मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्बुद्धि, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(12/03/2020 - 12/03/2036)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 12/03/2020 शुरू तथा 12/03/2036 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, आमदनी, लाभ, समृद्धि, स्वास्थ्य लाभ और भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति आपकी कुण्डली में एकादश भाव में है तथा तृतीय, पंचम एवं सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए साहस एवं समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु एकादश भाव में स्थित होकर तृतीय भाव को (पंचम एवं सप्तम भावों के अतिरिक्त) देख रहा है जिसके फल स्वरूप आप हिम्मत, बहादुरी तथा मजबूती के साथ सभी समस्याओं को झेल पाएंगे और कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको या आपके स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं कर पाएगी और आपको सामान्य कार्य करने में असुविधा नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु एकादश भाव अर्थात् आय भाव में स्थित है तथा अपने ही भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिसके फलस्वरूप आप इस दशा काल में चल या अचल संपत्ति अर्जित नहीं कर पाएँगे और भोग विलास की वस्तुओं पर खर्च करते हुए एक सामान्य जीवन का आनन्द लेंगे।

व्यवसाय :

यदि आप नौकरी में हैं तो आपको उन्नति तथा आय एवं धन में वृद्धि मिलेगी। व्यवसाय के प्रति अनेक नये विचार आपके दिमाग में आएंगे जिससे आप अपने व्यवसाय में नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। आपके मित्र व्यवसाय में उन्नति करने की आपको प्रेरणा देंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय तथा उत्साहपूर्ण बनाएँगे। गुरु की एकादश भाव से सप्तम अर्थात् जीवन साथी के भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपके जीवन साथी हमेशा आपकी परेशानी में हाथ बँटाने के लिए तैयार रहेंगे। आपके बड़े भाई तथा मित्र भी आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी ज्ञान की खोज के प्रति रुचि रहेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

**अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(11/11/2024 - 17/02/2027)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 12/03/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 11/11/2024 को प्रारंभ होकर 17/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल होंगे। सब कार्य पूर्ण होंगे। लक्ष्य की ओर उन्मुख रहेंगे। व्यापार, विज्ञान और संचार माध्यमों के कार्य में दक्ष होंगे। वर्षों तक लोग आपके नाम और काम को याद रखेंगे। साहित्यिक प्रतिभा के लिए प्रशंसा होगी। कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा, माता से संबंध उत्तम रहेंगे। भूमि, जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। परिवार से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है; धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता की आय अच्छी होगी। माता को व्यापार में लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए विभिन्न माध्यमों से लाभ, सत्कार्यों पर खर्च, यात्रा और विरोधियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान की स्पर्धियों पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा में प्रगति करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, सम्मानित होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी ; उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा; व्यापार में भी अच्छी आय होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। त्वचा रोग और गठिया आदि से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - केतु
(17/02/2027 - 23/01/2028)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 12/03/2020 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 17/02/2027 को प्रारंभ होकर 23/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

आपके इस अवधि में पिता से संबंध मधुर होंगे। नेकी के कार्य करेंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। धर्म और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। दूरदृष्टि और विवेक उत्तम होंगे। धन संचित होगा। अध्यात्म में रुचि होगी। किसी विवाद में फंस सकते हैं। आर्थिक प्रगति होगी; धन और सुखसाधनों में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी के मार्ग में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आपके पिता अध्यात्म में

रुचि ले सकते हैं; घर से बाहर कहीं पर जीवनयापन कर सकते हैं। आपकी माता के रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारों से अनबन, सफलता, समृद्धि और सुख-साधनों का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, नौकरी मिल सकती है, भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो नींव मजबूत होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को हिम्मत के साथ आगे बढ़ना श्रेयस्कर रहेगा; आय उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र (23/01/2028 - 23/09/2030)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 12/03/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 23/01/2028 को प्रारंभ होकर 23/09/2030 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे। किस्मत चमकेगी। धन और सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। समाज में सफलता मिलेगी; जीवन आमोद-प्रमोद में गुजरेगा। धनागम होगा; वाहनसुख संभव है। अगर विवाहित हैं तो शिशु का जन्म हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी होगा। शिक्षा उत्तम होगी और प्रगति के अवसर मिलेंगे।

आपके जीवनसाथी के पद और सम्मान में वृद्धि होगी। आपके पिता को सफलता आसानी से मिल जाएगी। माता के जीवन में अचानक कुछ घट सकता है।

आपके भाई-बहनों के लिए धन, सामूहिक कार्यों और परीक्षा में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान अगर कार्यरत है तो साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत है तो कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा; धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों और पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः